हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा 5 जून 2020 को विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 5 जून 2020 को **विश्व पर्यावरण दिवस** मनाया गया, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, संस्थान के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों के कर्मचारियों, इन क्षेत्रों से जुड़े किसानों, जिला शिमला के विभिन्न ग्राम पंचायतों की जैव-विविधता प्रबंधन समितियों के सदस्यों तथा स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों ने

वेबिनार 'गूगल मीट' (Google Meet) के माध्यम से भागीदारी की । कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए **डॉ. एस. एस. सामंत, निदेशक,** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि पर्यावरण के बिना मानव का अस्तित्व असंभव है। दुनिया में हर वर्ष की तरह इस बार भी 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है । उन्होने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस की नींव 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में रखी गई। 1974 में पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया । पर्यावरण के प्रति बढ़ते खतरों को रोकने और इसे सुरक्षित करने के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए यह दिन मनाया जाता है। पर्यावरण सुधारने और इसे बिगाड़ने के लिए मानव जिम्मेदार है। ऐसे में हमें पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए अपना योगदान देना चाहिए। कोरोना संकट के दौरान प्रकृति का नया रूप सामने आया है, जो बताता है कि यह दुनिया बहुत खूबसूरत है और इसे पर्यावरण को बेहतर बनाकर और सुंदर बनाया जा सकता है । **डॉ. एस. एस. सामंत** ने **'जैव-विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं और जलवायु परिवर्तन'** पर अपनी प्रस्तुति दी, उन्होने बताया कि जैव-विविधता जीवों के बीच पायी जाने वाली विविधता एवं विभिन्नता है जोकि प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और उनकी पारितंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है। उन्होने हिमालय में पाई जाने वाली जैव-विविधता के संरक्षण एवं संवर्धन पर विस्तृत जानकारी प्रदान की । डॉ. सामंत ने कहा कि जैव-विविधता का स्तर, मूल्य, पारिस्थिकी तंत्र सेवाएँ, जैव-विविधता के ह्रास के कारण, जलवायु परिवर्तन का जैव-विविधता पर असर, सतत उपयोग एवं सरंक्षण विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों की जैव-विविधता के सरंक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की । डॉ. सामंत ने बताया कि कोरोना जैसी बीमारी का समाधान भी जैव-विविधता के घटकों से संभव है । विशेष रूप से जड़ी बूटियों व जंगली खाद्य पदार्थ इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं ।

श्री जगदीश सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' ने **'उत्तर पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में औषधीय पौधों की विविधता'** पर अपनी प्रस्तुति दी तथा बताया कि वर्तमान समय में औषधीय पौधों के महत्व तथा स्थानीय उपयोगों एवं कृषिकरण से आय बढ़ोतरी के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक 'ई' ने **'वन पारिस्थितिकी तंत्र में कवक की भूमिका'** पर प्रस्तुति के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की तथा वनों में कई खाने योग्य कवक प्रजातियों एवं माइकोराईजा के महत्व पर भी प्रकाश डाला ।

डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक 'जी' ने **'जैविक खेती, खाद एवं केंचुआ खाद तकनीकों'** पर प्रस्तुति दी तथा जीवअमृत, संतुलित मिट्टी, हरित कचरे से खाद के निर्माण एवं वर्तमान में जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला ।

कार्यक्रम के अंत में निदेशक ने जिला शिमला की विभिन्न ग्राम पंचायतों की जैव-विविधता प्रबंधन समितियों के सदस्यों, जम्मू, ताबो, ब्रूनधार, बीड प्लासी, शिलारू, शिल्ली के प्रतिभागियों, स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों, संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधार्थियों का इस आयोजन हेतु अपना बहूमूल्य समय निकाल कर इस आयोजन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी संस्थान को इसी प्रकार उनका सहयोग मिलता रहेगा । इस आयोजन में लगभग 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

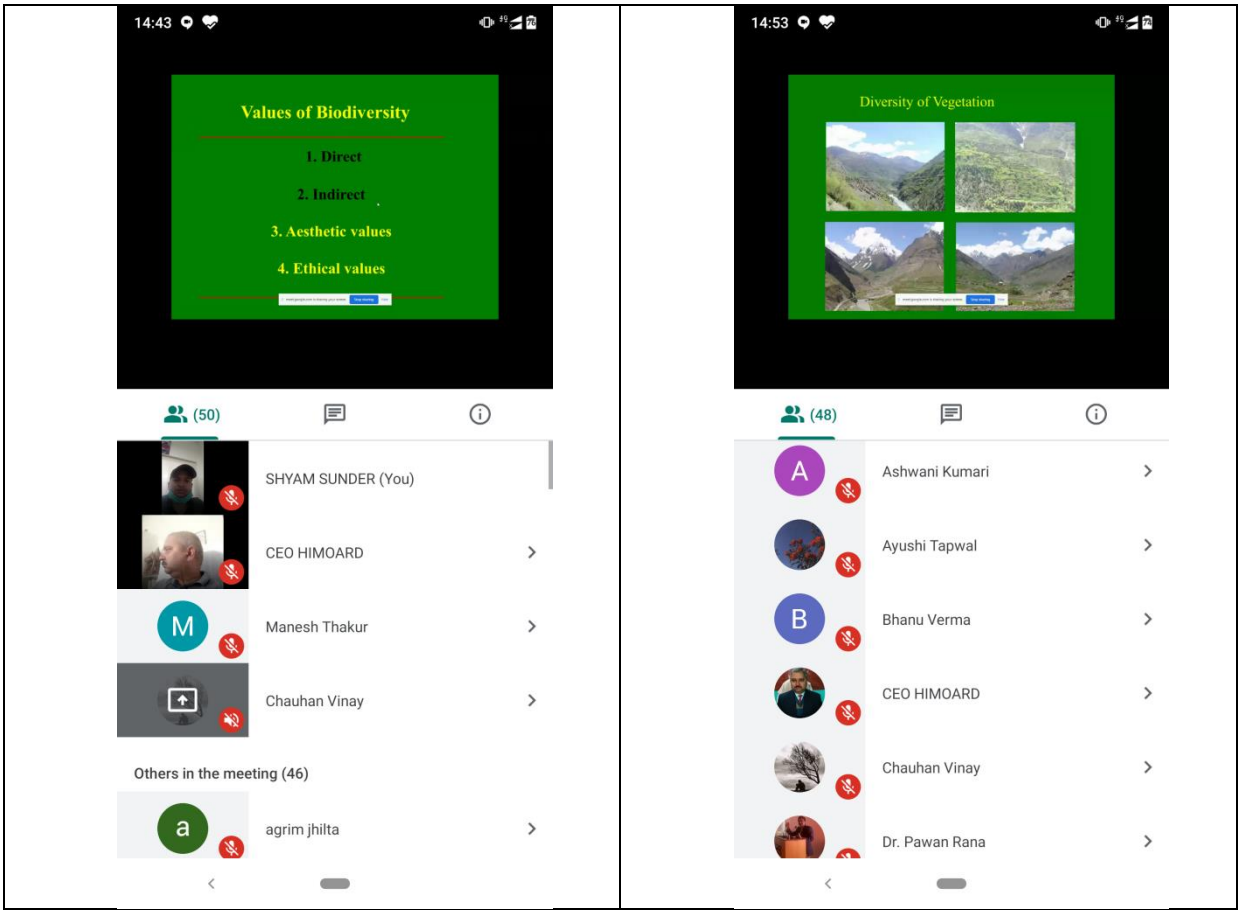

मीडिया कवरेज़

दैनिक भास्कर हिमाचल 09-06-2020

कोरोना संकट के दौरान प्रकृति का नया रूप सामने आया: डॉ. सामंत

शिमला | एचएफआरआई शिमला में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। एचएफआरआई के निदेशक डॉ. एसएस सामंत ने कहा कि कोरोना संकट के दौरान प्रकृति का नया रूप सामने आया है, जो बताता है कि यह दुनिया बहुत खूबसूरत है और इसे पर्यावरण को बेहतर बनाकर और सुंदर बनाया जा सकता है। उन्होंने हिमालय में पाई जाने वाली जैव-विविधता के संरक्षण एवं संवर्धन पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। वैज्ञानिक डॉ. अश्वनी तपवाल ने 'वन पारिस्थितिकी तंत्र में कवक की भूमिका' पर प्रस्तुति के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की और वनों में कई खाने योग्य कवक प्रजातियों एवं माइकोराईजा के महत्व पर भी प्रकाश डाला। वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने 'जैविक खेती, खाद एवं केंचुआ खाद तकनीकों' पर प्रस्तुति दी।

****